SUBJECT- PSYCHOLOGY.

B.A- part-III (Hons), paper-VI, Group-A
System of psychology

Lesson-① STRUCTURALISM - संरचनावाद

"The acknowledged leader of the Structuralism was Titchener whose system and whose experiments have been generally recognized as constituting him the spiritual successor to Wundt" Gardner Murphy - "Historical Introduction to Modern psychology". Routledge & Kegan paul Limited. इस पंक्ति से स्पष्ट है कि यद्यपि संरचनावाद की स्थापना Wilhelm wundt ने कि उनका शिष्यत्व ग्रहण करनेवाले अमेरिकी विद्वान E.B. Titchener थे इसलिए संरचनावाद के प्रतिपादक टीचनर को कहा जाता है। 1890 से 1892 तक अंग्रेज टीचनर जर्मनी के लिपजिग नगर में जाकर अपने गुरु वुन्ट से शिक्षा ली एवं उनके निर्देशन में ph.D की उपाधि लेकर अमेरिका लौट आए और James Angell द्वारा स्थापित Laboratories में तरह-तरह के मनोवैज्ञानिक प्रयोग किये। "An outline of psychology - 1896, Experimental psychology - 1901-1905 - in four volume, Experimental psychology of thought process - 1909, और Textbook of psychology - 1910 आदि टीचनर के द्वारा लिखित महान ग्रंथों में से एक हैं।

"The postulates of structural psychology" नामक शोधपत्र जिसे 1898 ई० में Titchener ने प्रकाशित करते हुए "संरचनावाद" की घोषणा की एवं निम्नलिखित सात विशेषताओं अथवा बिन्दुओं के आधार पर संरचनावाद की व्याख्या की :-

① मनोविज्ञान का विषय वस्तु-(Subject-Matter) - Titchener ने स्पष्ट कहा कि सभी विज्ञान का प्रारंभिक बिन्दु अनुभूति - Experience है उन्होंने wundt के immediate experience को नहीं माना। टीचनर ने कहा - "अनुभव करने वाले व्यक्ति पर आधारित अनुभूति ही मनोविज्ञान की विषय-वस्तु है।"

Tichner के अनुसार मन एवं चेतन में अंतर है, जन्म से मृत्यु काल तक व्यक्ति के अनुभूतियों के योग को मन कहते हैं जबकि समय विशेष में हुए अनुभूतियों के योग को चेतन कहते हैं।

Wundt- संवेदना एवं भाव को चेतना कहा जबकि Titchener ने संवेदना, प्रतिमा एवं भाव तीनों को मिलाकर Consciousness - चेतना कहा।

Scanned with CamScanner

Titchener की प्रसिद्ध पुस्तक "Outline of Psychology" में उन्होंने Sensation के 42415 प्रकारों की चर्चा की।

सुख-दुःख, तनाव-शिथिलता, उत्तेजना-शांत जैसे वुंट का "Three dimentional Theory" कहा जाता था Titchener ने नहीं स्वीकारा बल्कि केवल सुख-दुःख को ही माना संवेदना के आयामों को प्रतिमा एवं संवेदना के आधार पर परिभाषित कर दिया।

वुंट ने चेतना के तत्वों की विशेषताएँ बताते हुए गुण-(Quality) एवं तीव्रता-(Intensity) को महत्वपूर्ण बताया जबकि टीचनर ने दो और विशेषताओं Clarity - स्पष्टता तथा अवधि (duration) को जोड़कर व्याख्या की। टीचनर ने बताया कि संवेदना तथा प्रतिमा में चार विशेषताएँ होती है जबकि भाव में स्पष्टता की विशेषता को छोड़कर बाकी तीनों विशेषताएँ होती हैं।

इसलिए टीचनर ने संरचनावाद के द्वारा चेतन के तत्वों एवं उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट व्याख्या की।

(2.) मनोविज्ञान की विधियाँ (Methods of Psychology) - Wundt की तरह Titchener ने भी introspection तथा experimentation को मनोविज्ञान की प्रमुख विधि माना। अन्तर्निरीक्षण विधि को प्रभावी बनाने के लिए टीचनर ने निम्नलिखित बातों पर जोर दिया।

(a) Observer को पूर्णतः निष्पक्ष एवं अनुभवी होना चाहिए।
(b) प्रेक्षक को अपने ध्यान पर पूर्णतः नियंत्रण होना चाहिए।
(c) प्रेक्षक द्वारा जो introspection किया जाए वह Positive Attitude से किया जाए।

Titchener ने Stimulus Error की व्याख्या करते हुए बताया कि विषयवस्तु या वस्तु का प्रेक्षण करते समय यदि उस घटना अथवा वस्तु से उत्पन्न चेतन अनुभूति की व्याख्या नहीं करते हुए सीधे घटना अथवा वस्तु की व्याख्या हो तो इसे उद्दीपन त्रुटि कहा जाता है। Titchener ने अन्तर्निरीक्षक को विधि प्रशिक्षित होना चाहिए इस पर बल दिया।

(3.) चयन के नियम - (Principle of selection) व्यक्ति क्यों कुछ उद्दीपनों का चेतना में चयन करता है इसे समझाने के लिए Titchener ने तीन अवस्थाओं से समझाया।

(i) अनैच्छिक या प्राथमिक ध्यान → जब अचानक stimulus होने पर हमारा ध्यान उधर चला जाता है तो ऐसे ध्यान को ही अनैच्छिक अथवा प्राथमिक ध्यान कहते हैं।
(ii) ऐच्छिक या द्वितीयक ध्यान → अपनी इच्छा से जब व्यक्ति किसी उत्तेजना पर ध्यान देता है।
(iii) व्युत्पन्न (Derived) अथवा अभ्यासगत अनैच्छिक ध्यान - पुरानी सीखी गई आदतों को दोहराने पर ऐसी अवस्था आती है।

Scanned with CamScanner

Titchener ने तीनों अवस्थाओं को सतत एवं एक-दूसरे से जुड़ा हुआ माना।

(4.) **संबंध के नियम (Principle of connection)** – इन्होंने Law of Association को Titchener ने महत्व नहीं दिया फिर भी उन्होंने Law of contiguity (सामीप्यता) को चेतन अनुभूति के लिए जरूरी समझा। चेतन अनुभूति में संवेदी या प्रतिमामूली तत्व साथ-साथ उत्पन्न होते हैं ऐसा कहा। Titchener ने कहा कि चेतन में पाए जाने वाले विभिन्न तत्व आपस में मिले-जुले रहते हैं इसे ही उन्होंने Law of synthesis कहा। 1915 में Context theory of meaning में बताया कि संवेदना या प्रतिमा का अर्थ संदर्भ Reference द्वारा निर्धारित होता है जिसमें वह चेतना में उत्पन्न होता है।

(5.) **संवेग (Emotion)** – संवेग के बारे में बताते हुए टीचनर ने कहा कि किसी संवेदना के कारण उत्पन्न होने वाले तीव्र भाव ही संवेग है। 1910 में "Textbook of psychology" नामक प्रसिद्ध पुस्तक में Titchener ने प्रभाव की विधि एवं अभिव्यक्ति की विधि की व्याख्या की। भावात्मक गुणों या विशेषताओं की तुलना करना प्रभाव की विधि कहलाता है जबकि संवेग का अध्ययन जब सांस की गति, रक्तचाप एवं हृदय की गतियों के आधार पर होता इसे अभिव्यक्ति विधि कहते हैं। Psychogalvanic Skin Reaction नामक मापन की शुरुआत इसी समय शुरु हुई।

(6.) **चिन्तन – (Thinking)** – चिन्तन में संवेदना एवं प्रतिमा का मिश्रण होता है ऐसा टीचनर ने कहा। चिन्तन अचेतन स्वरूप का होता है और उसका अर्थ अचेतन रूप से समझाया जाता है। कुल्पे की धारणा कि चिन्तन में इच्छा सम्मिलित होता है का टीचनर ने विरोध किया। "उर्जबर्ग" विचारधारा को आंशिक रूप से टीचनर ने माना। चिन्तन अर्थपूर्ण होता है एवं अचेतन स्वरूप का होता है यह मान्यता "उर्जबर्ग" की ही थी।

(7.) **मन-शरीर समस्या – (Mind-Body problem)** – कुल्पे का यह विचार की मन या मानसिक क्रियाएँ शरीर या शारीरिक क्रियाएँ से भिन्न होती हैं, इन दोनों के बीच कोई interaction नहीं होता है और आपस में एक दूसरे को प्रभावित भी नहीं करते हैं जिसे मनोदैहिक समानान्तरवाद (Psychophysical parallelism) कहा जाता है; को Titchener ने पूर्णतः माना है।

निष्कर्ष के रूप में टीचनर का संरचनावाद मनोविज्ञान के क्या, क्यों एवं कैसे इन तीन प्रश्नों को बेहतर तरीके से समझाया तथा Wundt की तुलना में ज्यादा स्पष्ट एवं वैज्ञानिक माना जाता है।

Dr. AJAY KUMAR, ASSO. PROF., & H.O.D. PSYCHOLOGY
J. J. COLLEGE, ARA – (V.K.S.U. ARA BIHAR)
email- ajaypsychologyara@gmail.com
MO.No - 8789427854

Scanned with CamScanner